KAFAN KI VAPASI (HINDI)

कफ़न की वापसी

मअ़ र-जबुल मुरज्जब की बहारें

बीज बोने का महीना 3

पांच बा ब-र-कत रातें 5

रजब के एक रोज़े की फ़ज़ीलत 8

मक्तूबे अ़त्तार 20

❁ दो साल की इबादत का सवाब 13

❁ नूरानी पहाड़ 14

❁ रजब के कूंडे 15

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

कफ़न की वापसी

येह रिसाला (**कफ़न की वापसी**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात,

फ़ोन : 079-25391168 MO. 9374031409

E-mail : maktabahind@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

कफ़न की वापसी

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (26 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के फ़वाइद ख़ुद ही देख लेंगे।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी दुआए मग़्फ़िरत) करते रहेंगे।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۱ص۴۹۷ حدیث۱۸۳۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बसरा की एक नेक ख़ातून ने ब वक़्ते वफ़ात अपने बेटे को **वसिय्यत** की, कि मुझे उस कपड़े का **कफ़न** देना जिसे पहन कर मैं **र-जबुल मुरज्जब** में इ़बादत किया करती थी। बा'द अज़ वफ़ात बेटे ने किसी और कपड़े में कफ़्ना कर दफ़्ना दिया। जब वोह क़ब्रिस्तान से घर आया तो येह देख कर थर्रा उठा कि जो कफ़न उस ने पहनाया था वोह घर में मौजूद था! जब उस ने घबरा कर मां की **वसिय्यत वाले कपड़े** तलाश किये तो वोह अपनी जगह से ग़ाइब थे। इतने में एक ग़ैबी आवाज़ गूंज उठी : "अपना कफ़न वापस ले लो (जिस की उस ने वसिय्यत की थी) हम ने उस को उसी कपड़े में कफ़्नाया है (क्यूं कि) जो **रजब के रोज़े**

रखता है हम उस को **क़ब्र में रन्जीदा** नहीं रहने देते।" (نُزهَةُ المَجالِس ج١ ص٢٠٨)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रजब के मुख़्तलिफ़ नाम और मआ़नी

"**मुका-श-फ़तुल कुलूब**" में है : "रजब" दर अस्ल **तरजीब** से **मुश्तक़** (या'नी निकला) है इस के मा'ना हैं, "ता'ज़ीम करना।" इस को **अल असब** (या'नी तेज़ बहाव) भी कहते हैं इस लिये कि इस माहे मुबारक में तौबा करने वालों पर रह़मत का बहाव तेज़ हो जाता और इ़बादत करने वालों पर क़बूलिय्यत के अन्वार का फ़ैज़ान होता है। इसे **अल असम** (या'नी बहरा) भी कहते हैं क्यूं कि इस में जंगो जदल की आवाज़ बिल्कुल सुनाई नहीं देती। (مُکاشَفةُ القُلوب ص٣٠١) "**ग़ुन्यतुत्त़ालिबीन**" में है कि इस माह को "**शहरे रजम**" भी कहते हैं क्यूं कि इस में शैत़ानों को रजम (या'नी पथ्थर मारे जाते हैं) ताकि वोह मुसल्मानों को ईज़ा न दें। इस माह को **असम** (या'नी बहरा) भी कहते हैं क्यूं कि सुना नहीं गया कि इस माह में किसी क़ौम पर **अल्लाह तआ़ला** ने अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाया हो, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने गुज़श्ता उम्मतों को हर महीने में अ़ज़ाब दिया और इस माह में किसी क़ौम को अ़ज़ाब न दिया। (غُنیَةُ الطّالِبِین ج١ ص٣١٩،٣٢٠)

रजब के तीन ह़ुरूफ़ की भी क्या बात है!

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** माहे **र-जबुल मुरज्जब** की बहारों की तो क्या बात है! "**मुका-श-फ़तुल कुलूब**" में है, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِین फ़रमाते हैं : "**रजब**" में तीन[3] ह़ुरूफ़ हैं।

'ر،ج،ب', "ر" से मुराद रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ, "ج" से मुराद बन्दे का जुर्म, "ب" से मुराद **बिर** या'नी एह़सान व भलाई । गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मेरे बन्दे के जुर्म को मेरी रह़मत और भलाई के दरमियान कर दो । (مُکاشَفۃُ الْقُلوب ص ۳۰۱)

ड़स्यां से कभी हम ने कनारा न किया पर तूने दिल आज़ुर्दा हमारा न किया

हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़ लेकिन तेरी रह़मत ने गवारा न किया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

बीज बोने का महीना

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सफ़्फ़ूरी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **र-जबुल मुरज्जब** बीज बोने का, **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** आबपाशी (या'नी पानी देने) का और **र-मज़ानुल मुबारक** फ़स्ल काटने का महीना है । लिहाज़ा जो र-जबुल मुरज्जब में इ़बादत का बीज नहीं बोता और शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में आंसूओं से सैराब नहीं करता वोह **र-मज़ानुल मुबारक** में फ़स्ले रह़मत क्यूंकर काट सकेगा ? मज़ीद फ़रमाते हैं : **र-जबुल मुरज्जब** जिस्म को, **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** दिल को और **र-मज़ानुल मुबारक** रूह़ को पाक करता है । (نُزْھَۃُ الْمَجالِس ج ۱ ص ۲۰۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! र-जबुल मुरज्जब में इ़बादत और रोज़ों का ज़ेह्न बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से मरबूत़ (या'नी वाबस्ता) रहिये । सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनिये और दा'वते इस्लामी की जानिब से **र-मज़ानुल मुबारक** में किये जाने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में ह़िस्सा लीजिये

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** आ जाएगा । तरग़ीबन एक म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे **फ़त्ह पूर कमाल** (ज़िल्अ़ रहीम यार ख़ान, पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि म-दनी माहोल से पहले मैं नमाज़ तो पाबन्दी से पढ़ता था मगर इस के बा वुजूद मुख़्तलिफ़ गुनाहों का आ़दी था । म-सलन गाने बाजे सुनना, फ़िल्में डिरामे देखना, ताश खेलना वग़ैरा । मैं हमेशा कॉलेज जाते हुए अपनी साइकिल एक इस्लामी भाई की दुकान पर खड़ी करता था । **र-जबुल मुरज्जब** के अय्याम थे एक रोज़ जब मैं अपनी साइकिल दुकान पर खड़ी करने के लिये गया तो उस इस्लामी भाई ने शबे मे'राज के सिल्सिले में होने वाले **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** की दा'वत दी । मैं ने शिर्कत की हामी भर ली और उस रात अकेला अपनी बस्ती से जो कि कुछ फ़ासिले पर थी आया और पूरी रात इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में शिर्कत की । मुझे उस इज्तिमाए़ पाक में बहुत ही सुकून मिला जिस की वजह से मैं ने हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में पाबन्दी के साथ शिर्कत करना शुरूअ़ कर दी । इस दौरान **र-मज़ानुल मुबारक** का बा ब-र-कत महीना भी तशरीफ़ ला चुका था । इस्लामी भाइयों ने मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के ए'तिकाफ़ के लिये तय्यार किया । मैं **मु-तअस्सिर** तो पहले ही हो चुका था चुनान्चे ए'तिकाफ़ के लिये तय्यार हो गया । दस रोज़ा ए'तिकाफ़ में मुझे सीखने को बहुत कुछ मिला और उसी में मैं ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़मामा शरीफ़ का ताज सजा लिया और उस दिन से दाढ़ी भी रख ली और गुनाहों भरी ज़िन्दगी से भी नफ़रत हो गई । ता दमे तह़रीर डिवीज़न म-दनी इन्आ़मात के

ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से म-दनी कामों में मसरूफ़ हूं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए।

एक जन्नती नहर का नाम रजब है

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत ãñçÜU**रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जन्नत में एक नहर है जिसे "रजब" कहा जाता है जो दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शहद से ज़ियादा मीठी है तो जो कोई रजब का एक रोज़ा रखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इस नहर से सैराब करेगा।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳٦۷حدیث۳۸۰۰)

जन्नती महल

ताबेई बुज़ुर्ग **हज़रते** सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **रजब** के **रोज़ादारों** के लिये जन्नत में एक **महल** है।

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳٦۸حدیث۳۸۰۲)

पांच बा ब-र-कत रातें

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : "पांच रातें ऐसी हैं जिस में दुआ रद नहीं की जाती ﴿1﴾ रजब की पहली (या'नी चांद) रात ﴿2﴾ पन्दरह शा'बान की रात (या'नी शबे बराअत) ﴿3﴾ जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी रात ﴿4﴾ ईदुल फ़ित्र की (चांद) रात ﴿5﴾ **ईदुल अज़्हा** की (या'नी **ज़ुल हिज्जह** की दसवीं) रात।"

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج۱۰ص۴۰۸)

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते

हैं : साल में पांच रातें ऐसी हैं जो इन की तस्दीक़ करते हुए ब निय्यते सवाब इन को इबादत में गुज़ारे तो **अल्लाह तआला** उसे **दाख़िले जन्नत** फ़रमाएगा ﴾1﴿ रजब की पहली रात कि इस रात में इबादत करे और इस के दिन में रोज़ा रखे ﴾2﴿ शा'बान की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत) कि इस रात में इबादत करे और दिन में रोज़ा रखे ﴾3,4﴿ ईदैन (या'नी ईदुल फ़ित्र और **ईदुल अज़्हा** या'नी 9 और 10 **ज़ुल हिज्जह** की दरमियानी शब) की रातें कि इन रातों में इबादत करे और दिन में रोज़ा न रखे (ईदैन के दिन रोज़ा रखना ना जाइज़ है) ﴾5﴿ और शबे आशूरा (या'नी मुहर्रमुल हराम की दसवीं शब) कि इस रात में इबादत करे और दिन में रोज़ा रखे।

(فَضائِلُ شَهْرِ رَجَب ، لِلخَلّال ص ۱۰، غُنْيَةُ الطّالِبِيْن ج ۱ ص ۳۲۷)

पहला रोज़ा तीन साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा

हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि बेचैन दिलों के चैन, **सरवरे कौनैन, नबिय्युल हरमैन, सय्यिदुस्सक़लैन, इमामुल क़िब्लतैन**, साहिबे क़ाब क़ौसैन, नानाए हसनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : "**रजब** के **पहले** दिन का रोज़ा तीन[3] साल का कफ़्फ़ारा है, और **दूसरे** दिन का रोज़ा दो[2] साल का और **तीसरे** दिन का एक साल का कफ़्फ़ारा है, फिर हर दिन का रोज़ा एक माह का कफ़्फ़ारा है।"

(اَلجامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطی ص ۳۱۱ حدیث ۵۰۰۱، فَضائِلُ شَهْرِ رَجَب ، لِلخَلّال ص ۷)

किश्तिये नूह में रजब के रोज़े की बहार

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने **रजब का एक**

रोज़ा रखा तो वोह **एक साल के रोज़ों** की त़रह़ होगा। जिस ने **सात रोज़े** रखे उस पर **जहन्नम** के सातों दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे, जिस ने **आठ रोज़े** रखे उस के लिये **जन्नत** के आठों दरवाज़े खोल दिये जाएंगे, जिस ने **दस रोज़े** रखे वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जो कुछ मांगेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अ़त़ा फ़रमाएगा। और जिस ने **पन्दरह रोज़े** रखे तो आस्मान से एक मुनादी निदा (या'नी ए'लान करने वाला ए'लान) करता है कि तेरे पिछले गुनाह बख़्श दिये गए पस तू अज़ सरे नौ अ़मल शुरूअ़ कर कि तेरी बुराइयां नेकियों से बदल दी गईं। और जो ज़ाइद करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़ियादा दे। और **रजब** में नूह़ (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) किश्ती में सुवार हुए तो ख़ुद भी **रोज़ा** रखा और हमराहियों को भी रोज़े का हुक्म दिया। उन की किश्ती **दस मुह़र्रम** तक छ माह बर सरे सफ़र रही। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۶۸حدیث۳۸۰۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक रोज़े की फ़ज़ीलत

मुह़क़्क़िक़े अ़लल इ़त़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं कि सुल्त़ाने मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : **माहे रजब** ह़ुरमत वाले महीनों में से है और छटे आस्मान के दरवाज़े पर इस महीने के दिन लिखे हुए हैं। अगर कोई शख़्स **रजब** में एक रोज़ा रखे और उसे परहेज़ गारी से पूरा करे तो वोह दरवाज़ा और वोह (रोज़े वाला) दिन उस बन्दे के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब करेंगे और अ़र्ज़ करेंगे : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस बन्दे को बख़्श दे और अगर वोह शख़्स बिग़ैर परहेज़ गारी के रोज़ा गुज़ारता है तो फिर वोह दरवाज़ा और दिन उस की बख़्शिश की

दर-ख़्वास्त नहीं करेंगे और उस शख़्स से कहते हैं : "ऐ बन्दे ! तेरे नफ़्स ने तुझे धोका दिया।" (مَاثَبَتَ بِالسُّنۃ ص۲۳٤،فَضائِلُ شَھْرِ رَجَب ، لِلخَلّال ص٤٠٣)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि रोज़े से मक़्सूद सिर्फ़ भूक प्यास नहीं, तमाम आ'ज़ा को गुनाहों से बचाना भी ज़रूरी है, अगर रोज़ा रखने के बा वुजूद भी गुनाहों का सिल्सिला जारी रहा तो फिर सख़्त महरूमी है।

60 महीनों का सवाब

हज़रते सय्यिदुना **अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **सत्ताईसवीं रजब** का जो कोई रोज़ा रखे, **अल्लाह तआला** उस के लिये **साठ महीने** के रोज़ों का सवाब लिखे। (فَضائِلُ شَھْرِ رَجَب ، لِلخَلّال ص١٠)

सो साल के रोज़े का सवाब

सत्ताईसवीं र-जबुल मुरज्जब की अ़-ज़-मतों के क्या कहने ! इसी तारीख़ में हमारे प्यारे प्यारे, मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मे'राज शरीफ़ का अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा अ़ता हुवा। (شَرحُ الزُّرقانی عَلَی المَواھِبِ اللَّدُنِّیۃ ج٨ص١٨) चुनान्चे 27वीं रजब शरीफ़ के रोज़े की बड़ी फ़ज़ीलत है। जैसा कि **हज़रते** सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, **दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "**रजब** में एक दिन और रात है जो उस दिन रोज़ा रखे और रात को क़ियाम (इ़बादत) करे तो गोया उस ने सो100 साल के रोज़े रखे, सो100 बरस की शब बेदारी की और येह **रजब** की सत्ताईस तारीख़ है।" (شُعَبُ الْاِیمَان ج٣ص٣٧٤حدیث ٣٨١١)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रजब में परेशानी दूर करने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : ''जो माहे रजब में किसी मुसल्मान की परेशानी दूर करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को जन्नत में एक ऐसा महल अ़ता फ़रमाएगा जो हद्दे नज़र तक वसीअ़ होगा । तुम **रजब** का इक्राम करो **अल्लाह तआ़ला** तुम्हारा हज़ार करामतों के साथ इक्राम फ़रमाएगा ।''

(غُنیۃُ الطّالِبین ج۱ ص۳۲٤،معجمُ السّفر لِلسّلفی ص٤۱۹رقم۱٤۲۱)

एक नेकी सो साल की नेकियों के बराबर

रजब में एक रात है कि इस में नेक अ़मल करने वाले को सो बरस की नेकियों का सवाब है और वोह रजब की **सत्ताईसवीं शब** है । जो इस में बारह रक्अ़त इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में **सूरए फ़ातिह़ा** और कोई सी एक सूरत और हर दो[2] रक्अ़त पर **अत्तह़िय्यात** पढ़े और बारह पूरी होने पर सलाम फैरे, इस के बा'द 100 बार येह पढ़े : سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر, इस्तिग़फ़ार 100 बार, दुरूद शरीफ़ 100 बार पढ़े और अपनी दुन्या व आख़िरत से जिस चीज़ की चाहे दुआ मांगे और सुब्ह़ को **रोज़ा** रखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की सब दुआएं क़बूल फ़रमाए सिवाए उस दुआ के जो गुनाह के लिये हो ।

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۷٤حدیث۳۸۱۲)

र-जबुल मुरज्जब के रोज़े

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक चार[4] महीने ख़ुसूसिय्यत के साथ ह़ुरमत वाले हैं । चुनान्चे पारह 10 **सू-रतुत्तौबह** आयत 36 में इर्शाद होता है :

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ۬ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۶﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक महीनों की गिनती **अल्लाह** के नज़्दीक बारह महीने हैं **अल्लाह** की किताब में, जब से उस ने आस्मान व ज़मीन बनाए इन में से चार हुरमत वाले हैं, येह सीधा दीन है तो इन महीनों में अपनी जान पर जुल्म न करो और मुश्रिकों से हर वक़्त लड़ो जैसा वोह तुम से हर वक़्त लड़ते हैं और जान लो कि **अल्लाह** परहेज़ गारों के साथ है ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आयते मुबा-रका में क़-मरी महीनों का ज़िक्र है जिन का हिसाब चांद से होता है, बहुत से अहकामे शर-अ़ की बिना (या'नी बुन्याद) भी क़-मरी महीनों पर है । म-सलन र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े, ज़कात, मनासिके ह़ज शरीफ़ वग़ैरा नीज़ इस्लामी तहवार म-सलन ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, ईदुल फ़ित्र, **ईदुल अज़्हा**, शबे मे'राज, शबे बराअत, ग्यारहवीं शरीफ़, आ'रासे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن वग़ैरा भी क़-मरी महीनों के हिसाब से मनाए जाते हैं । अफ़्सोस ! आजकल मुसल्मान जहां बे शुमार सुन्नतों से दूर जा पड़ा है वहां इस्लामी तारीख़ों से भी बिल्कुल ना आशना होता जा रहा है । ग़ालिबन एक लाख मुसल्मानों के इज्तिमाअ़ में अगर येह सुवाल किया जाए कि "बताओ आज किस हिजरी सिन के कौन से महीने की

कितनी तारीख़ है ?" तो शायद ब मुश्किल सो मुसल्मान ऐसे होंगे जो सही़ह़ जवाब दे सकें ! याद रहे कि बहुत से मुआ़-मलात जैसे ज़कात की फ़र्ज़िय्यत वग़ैरा में क़-मरी महीनों का लिह़ाज़ रखना फ़र्ज़ है। आयते गुज़श्ता ÜU¼ãtÇ सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى "ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान" में फ़रमाते ãñ: (चार[4] हु़रमत वाले महीनों से मुराद) तीन मुत्तसिल (या'नी यके बा'द दी-गरे) ज़ुल क़ा'दह, ज़ुल हि़ज्जह, मुह़र्रम और एक जुदा रजब। अ़रब लोग ज़मानए जाहिलिय्यत में भी इन में क़िताल (या'नी जंग) ह़राम जानते थे। इस्लाम में इन महीनों की हु़रमत व अ़-ज़मत और ज़ियादा की गई।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 309)

रजब के एह़तिराम की ब-र-कत की ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना **ई़सा रूहु़ल्लाह** عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दौर का वाक़िआ़ है कि एक शख़्स मुद्दत से किसी औ़रत पर आ़शिक़ था। एक बार उस ने अपनी मा'शूक़ा पर क़ाबू पा लिया। लोगों की हलचल से उस ने अन्दाज़ा लगाया कि लोग चांद देख रहे हैं, उस ने उस औ़रत से पूछा : लोग किस माह का चांद देख रहे हैं ? जवाब दिया : "**रजब** का।" येह शख़्स ह़ालां कि ग़ैर मुस्लिम था मगर **रजब** शरीफ़ का नाम सुनते ही ता'ज़ीमन फ़ौरन अलग हो गया और "गन्दे काम" से बाज़ रहा। ह़ज़रते सय्यिदुना **ई़सा रूहु़ल्लाह** عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हु़क्म हुवा कि हमारे फ़ुलां बन्दे की मुलाक़ात को जाओ। आप عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ ले गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हु़क्म और अपनी तशरीफ़ आ-वरी का सबब इर्शाद

फ़रमाया । येह सुनते ही उस का दिल नूरे इस्लाम से जगमगा उठा और उस ने फ़ौरन इस्लाम क़बूल कर लिया । (انیسُ الواعِظین ص۱۷۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखी आप ने **रजब की बहारें ! र-जबुल मुरज्जब** की ता'ज़ीम कर के जब एक ग़ैर मुस्लिम को ईमान की दौलत नसीब हो गई । तो जो मुसल्मान हो कर **र-जबुल मुरज्जब** का एह़तिराम करेगा उस को न जाने क्या क्या इन्आ़म मिलेंगे । मुसल्मानों को चाहिये कि रजब शरीफ़ का ख़ूब ख़ूब इक्राम किया करें । क़ुरआने पाक में भी हुरमत (या'नी इ़ज़्ज़त) वाले महीनों में अपनी जानों पर ज़ुल्म करने से रोका गया है ।

"नूरुल इ़रफ़ान" में فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो इन महीनों में अपनी जान पर ज़ुल्म न करो) के तह़्त है **:** "या'नी ख़ुसूसिय्यत से इन चार महीनों में गुनाह न करो ।"

(नूरुल इ़रफ़ान, स. 306)

दो साल की इ़बादत का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ से मरवी है कि नबियों के सालार, शहन्शाहे अबरार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है **:** "जिस ने माहे ह़राम में तीन दिन **जुमा'रात, जुमुआ़** और **हफ़्ता** (या'नी सनीचर) का रोज़ा रखा उस के लिये दो साल की इ़बादत का सवाब लिखा जाएगा ।"

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج۱ص۴۸۵ حدیث۱۷۸۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां माहे ह़राम से मुराद येही चार माह **ज़ुल क़ा'दह, ज़ुल ह़िज्जह, मुह़र्रमुल ह़राम** और **र-जबुल मुरज्जब** हैं, इन चारों महीनों में से जिस माह में भी बयान कर्दा तीन दिनों का रोज़ा रख लेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दो साल की इ़बादत का सवाब पाएंगे ।

तेरे करम से ऐ करीम मुझे कौन सी शै मिली नहीं
झोली ही मेरी तंग है तेरे यहां कमी नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नूरानी पहाड़

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का गुज़र एक जग-मगाते **नूरानी पहाड़** पर हुवा । आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस पहाड़ को **क़ुव्वते** गोयाई (या'नी बोलने की त़ाक़त) अ़त़ा फ़रमा । वोह पहाड़ बोल पड़ा, **या रूहुल्लाह !** (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) आप क्या चाहते हैं ? फ़रमाया : अपना ह़ाल बयान कर । पहाड़ बोला : "मेरे अन्दर एक आदमी रहता है ।" सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उस को मुझ पर ज़ाहिर फ़रमा दे । यकायक पहाड़ शक़ हो (या'नी फट) गया और उस में से चांद सा चेहरा चमकाते एक बुज़ुर्ग बरआमद हुए । उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा कलीमुल्लाह** (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) का उम्मती हूं मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से येह दुआ़ की हुई है कि वोह मुझे अपने प्यारे मह़बूब, **नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की **बि 'सते**

मुबा-रका तक ज़िन्दा रखे ताकि मैं उन की ज़ियारत भी करूं और उन का उम्मती बनने का शरफ़ भी हासिल करूं । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं इस पहाड़ में छ सो साल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मश्ग़ूल हूं।'' हज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! क्या रूए ज़मीन पर कोई बन्दा इस शख़्स से बढ़ कर भी तेरे यहां मुकर्रम है ? इर्शाद हुवा : ऐ ईसा (عَلَيْهِ السَّلَام) ! **उम्मते मुहम्मदी में से जो माहे रजब का एक रोज़ा रख ले वोह मेरे नज़्दीक इस से भी ज़ियादा मुकर्रम है ।** (نُزْهَةُ الْمَجَالِس ج ۱ ص ۲۰۸) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

रजब के कूंडे

र-जबुल मुरज्जब की 22 तारीख़ को मुसल्मान हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق के ईसाले सवाब के लिये खीर पूरियां पकाते हैं जिन्हें ''**कूंडे शरीफ़**'' कहा जाता है । इस के ना जाइज़ या गुनाह होने की कोई वजह नहीं, हां बा'ज़ औ़रतें कूंडों की नियाज़ के मौक़अ़ पर ''दस बीबियों की कहानी'', ''लकड़ हारे की कहानी'' वग़ैरा पढ़ती हैं येह जाइज़ नहीं, क्यूं कि येह दोनों और जनाबे सय्यिदह की कहानी सब मन घड़त कहानियां हैं इन को न पढ़ा करें, इस के बजाए सूरए यासीन शरीफ़ पढ़ लिया करें कि दस क़ुरआन ख़त्म करने का सवाब मिलेगा । येह भी याद रहे कि कूंडे ही में खीर खाना, खिलाना ज़रूरी नहीं

दूसरे बरतन में भी खा और खिला सकते हैं और इस को घर से बाहर भी ले जा सकते हैं। बेशक नियाज़ व फ़ातिहा की अस्ल (या'नी बुन्याद) **ईसाले सवाब** है और "रजब के कूंडे" भी ईसाले सवाब ही की एक क़िस्म है और ईसाले सवाब (या'नी सवाब पहुंचाना) क़ुरआने करीम व अहादीसे मुबा-रका से साबित है। ईसाले सवाब दुआ के ज़रीए भी किया जा सकता है और खाना वग़ैरा पका कर उस पर फ़ातिहा दिला कर भी हो सकता है।

सहाबा सात दिन तक ईसाले सवाब करते

हज़रते अल्लामा **जलालुद्दीन सुयूती** शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सात रोज़ तक मुर्दों की तरफ़ से खाना खिलाया करते थे। (الحاوی للفتاوی للسّیوطی ج۲ ص ۲۲۳)

सहाबी ने मां की तरफ़ से बाग़ स-दक़ा कर दिया

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उबादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की वालिदा साहिबा का इन्तिक़ाल हुवा तो उन्हों ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी वालिदए मोहतरमा का मेरी ग़ैर मौजू-दगी में इन्तिक़ाल हो गया है, अगर मैं उन की तरफ़ से कुछ स-दक़ा करूं तो क्या उन्हें कोई फ़ाएदा पहुंच सकता है ? इर्शाद फ़रमाया : हां, अर्ज़ की : तो मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को गवाह बना कर कहता हूं कि मेरा बाग़ उन की तरफ़ से स-दक़ा है। (بُخاری ج۲ص ۲۴۱ حدیث۲۷۶۲) मा'लूम हुवा खाना खिलाने और बाग़ या'नी माल ख़र्च करने के ज़रीए भी ईसाले सवाब जाइज़ है और कूंडे शरीफ़ भी माली

ईसाले सवाब ही में शामिल हैं। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : अम्वाते मुस्लिमीन (या'नी मर्हूमीन) के नाम पर खाना पका कर ईसाले सवाब के लिये **तसद्दुक़** (या'नी ख़ैरात) करना बिला शुबा जाइज़ व मुस्तह़सन (या'नी पसन्दीदा) है और इस पर फ़ातिह़ा से ईसाले सवाब दूसरा मुस्तह़सन (या'नी पसन्दीदा) है और दो चीज़ों का जम्अ़ करना ज़ियादते ख़ैर (या'नी भलाई में इज़ाफ़ा) है (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 595) हर शख़्स को अफ़्ज़ल येही कि जो अ़-मले सालेह़ (या'नी जो भी नेक काम) करे उस का सवाब अव्वलीन व आख़िरीन अह़्या व अम्वात (या'नी सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर ता क़ियामत होने वाले) तमाम मुअमिनीन व मुअमिनात के लिये हदिय्या भेजे (या'नी ईसाले सवाब करे), सब को सवाब पहुंचेगा और उसे (या'नी जिस ने ईसाले सवाब किया) उन सब के बराबर अज्र मिलेगा। (ऐज़न, स. 617) ईसाले सवाब अच्छी निय्यत से किया जाए इस में नुमूदो नुमाइश (या'नी दिखावा) मक़्सूद न हो, न इस की उजरत व मुआ़-वज़ा लिया गया हो, वरना न सवाब है न ईसाले सवाब। या'नी जब सवाब ही न मिला तो पहुंचेगा कैसे !

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1201, जि. 3, स. 643)

अगर 22 र-जबुल मुरज्जब यौमे विसाल न हो तो ?

वस्वसा : सुना है 22 र-जबुल मुरज्जब सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का यौमे विसाल शरीफ़ ही नहीं आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق ने 15 र-जबुल मुरज्जब को पर्दा फ़रमाया था (شواهدُ النّبوه ص٢٤٥) लिहाज़ा

22 रजब को कूंडे नहीं करने चाहिएं।

जवाबे वस्वसा : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق की तारीख़े वफ़ात में इख़्तिलाफ़ ही सही और 22 र-जबुल मुरज्जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के विसाल का दिन न भी हो तब भी मुसल्मानों में इस दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ईसाले सवाब के लिये कूंडे शरीफ़ राइज हैं और ईसाले सवाब साल में जब भी करें जाइज़ है। कूंडे को ना जाइज़ कहना शरीअ़त पर इफ़्तिरा (या'नी तोहमत बांधना) है। ना जाइज़ कहने वाले पारह 7 **सू-रतुल माइदह** की आयत नम्बर 87 में बयान कर्दा हुक्मे इलाही से इ़ब्रत पकड़ें चुनान्चे इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! ह़राम न ठहराओ वोह सुथरी चीज़ें कि **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये ह़लाल कीं और ह़द से न बढ़ो। बेशक ह़द से बढ़ने वाले **अल्लाह** को ना पसन्द हैं।

दिन मुक़र्रर करना

वस्वसा : तीजा, चालीसवां, ग्यारहवीं, बारहवीं और कूंडे वग़ैरा के नाम से ईसाले सवाब के दिन क्यूं मख़्सूस कर लिये गए हैं ?

जवाबे वस्वसा : ईसाले सवाब के लिये शरीअ़त में कोई मुद्दत और वक़्त मु-तअ़य्यन करना (या'नी मुक़र्रर करना) ज़रूरी नहीं, अलबत्ता दिन वग़ैरा मुक़र्रर करने में शरअ़न ह़रज भी नहीं वक़्त मुक़र्रर करना दो[2] त़रह़ है (1) शर-ई : शरीअ़त ने किसी काम के लिये वक़्त मुक़र्रर फ़रमाया हो। म-सलन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है । (مسلم)

क़ुरबानी, ह़ज वगै़रा (2) उ़र्फ़ी : शरीअ़त की जानिब से वक़्त मुक़र्रर न हो लेकिन लोग अपनी और दूसरों की सहूलत और याद दिहानी या किसी ख़ास मस्लह़त के लिये कोई वक़्त ख़ास कर लें । जैसे आज कल मसाजिद में नमाज़ों की जमाअ़त के लिये अवक़ात मख़्सूस करना वगै़रा ह़ालां कि पहले जमाअ़त के लिये वक़्त तै़ नहीं होता था जब नमाज़ी इकट्ठे हो जाते तो जमाअ़त खड़ी कर दी जाती थी । बल्कि बा'ज़ कामों के लिये तो ख़ुद सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने वक़्त मुक़र्रर फ़रमाया नीज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين से भी ऐसा करना साबित है म-सलन (1) हु़ज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने शु-हदाए उहुद عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ज़ियारत के लिये सरे साल (या'नी बरस के आख़िर) का वक़्त मुक़र्रर फ़रमा लिया था[1] (2) सनीचर (या'नी हफ़्ते) के दिन सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मस्जिदे क़ुबा में तशरीफ़ लाना[2] (3) और सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से दीनी मुशा-वरत के लिये वक़्ते सुब्ह़ व शाम की ता'यीन[3] (4) ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने वा'ज़ व तज़्कीर के लिये पंज शम्बा (या'नी जुमा'रात) का दिन मुक़र्रर किया[4] (5) और उ़-लमा ने सबक़ शुरूअ़ करने के लिये बुध का दिन रखा ।[5]

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 585, 586)

۱: دُرِّمنثور ج ٤ ص ٦٤٠ ۲: مُسلِم ص ٧٢٤ حدیث ١٣٩٩ ۳: بُخاری ج ١ ص ١٨٠ حدیث ٤٧٦

٤: بُخاری ج ١ ص ٤٢ حدیث ٧٠ ۵: تعلیم المتعلم ص ٧٢

मक्तूबे अ़त्तार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी عَفِیَ عَنْهُ की जानिब से, **तमाम इस्लामी भाइयों, इस्लामी बहनों, मदारिसुल मदीना और जामिआ़तुल मदीना के असातिज़ा, त़-लबा, मुअ़ल्लिमात और त़ालिबात** की ख़िदमात में **का'बए मुशर्रफ़ा** के गिर्द घूमता हुवा गुम्बदे ख़ज़रा को चूमता हुवा **र-जबुल मुरज्जब, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** और **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़ादारों की ब-र-कतों से मालामाल झूमता हुवा सलाम,

اَلسَّلَامُ عَلَيكُم وَرَحمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَال

हो न हो आज कुछ मेरा ज़िक्र हुज़ूर में हुवा
वरना मेरी त़रफ़ ख़ुशी देख के मुस्कराई क्यूं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ एक बार फिर ख़ुशी के दिन आने लगे, माहे **र-जबुल मुरज्जब** की आमद आमद है। इस माहे मुबारक में इ़बादत का बीज बोया जाता, **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** में नदामत के अश्कों से आबपाशी की जाती और माहे **र-मज़ानुल मुबारक** में रह़मत की फ़स्ल काटी जाती है।

रजब के इब्तिदाई तीन रोज़ों की फ़ज़ीलत

र-ज़बुल मुरज्जब के क़द्रदानो ! ता'लीम व तअ़ल्लुम (या'नी सीखने और सिखाने) और कस्बे ह़लाल में रुकावट न हो, मां बाप भी मन्अ़ न करें तो जल्दी जल्दी और बहुत जल्दी मुसल्सल तीन माह के या जिस से जितने बन पड़ें उतने रोज़ों के लिये कमर बस्ता हो जाए, स-ह़री और इफ़्त़ार में कम खा कर **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** भी लगाए। काश !

हर घर में और मेरे जुम्ला मदारिसुल मदीना और तमाम जामिआ़तुल मदीना में **रोज़ों की बहारें** आ जाएं, बस पहली रजब शरीफ़ से ही रोज़ों का आग़ाज़ फ़रमा दीजिये ।

रजब के इब्तिदाई तीन रोज़ों के फ़ज़ाइल की भी क्या बात है ! ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन, ताजदारे ह़-रमैन, सरवरे कौनैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : ''**रजब** के **पहले** दिन का रोज़ा तीन साल का कफ़्फ़ारा है, और **दूसरे** दिन का रोज़ा दो साल का और **तीसरे** दिन का एक साल का कफ़्फ़ारा है, फिर हर दिन का रोज़ा एक माह का कफ़्फ़ारा है ।''

(اَلْجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص ۳۱۱ حدیث ۵۰۵۱، فَضائِلُ شَهْرِ رَجَب ، لِلخَلّال ص ۷)

मैं गुनहगार गुनाहों के सिवा क्या लाता
नेकियां होती हैं सरकार निकोकार के पास

नफ़्ली रोज़ों की भी क्या ख़ूब बहारें हैं, इस ज़िम्न में दो[2] अह़ादीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

(1) फ़िरिश्ते दुआ़ए मग़्फ़िरत करते हैं

ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे उ़मारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे यहां तशरीफ़ लाए तो मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा ब-र-कत में खाना पेश किया तो इर्शाद फ़रमाया : ''तुम भी खाओ ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : मैं रोज़े से हूं । तो रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने

फ़रमाया : जब तक रोज़ादार के सामने खाना खाया जाता है, फ़िरिश्ते उस (रोज़ेदार) के लिये दुआए मग़्फ़िरत करते रहते हैं। (سُنَنِ تِرمِذی ج۲ص۲۰۵ حدیث۷۸۵)

(2) रोज़ादार की हड्डियां कब तस्बीह़ करती हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नबिय्ये अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे आदम व बनी आदम, **रसूले मुह़तशम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते मुअ़ज़्ज़म में ह़ाज़िर हुए, उस वक़्त ह़ुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नाश्ता कर रहे थे, फ़रमाया : ऐ बिलाल ! नाश्ता कर लो, अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं रोज़ादार हूं, तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम अपनी रोज़ी खा रहे हैं, और बिलाल का रिज़्क़ जन्नत में बढ़ रहा है, ऐ बिलाल ! क्या तुम्हें ख़बर है कि जब तक रोज़ेदार के सामने कुछ खाया जाए तब तक उस की हड्डियां तस्बीह़ करती हैं, उसे फ़िरिश्ते दुआएं देते हैं।

(شُعَبُ الْاِیمان ج ۳ ص ۲۹۷ حدیث ۳۵۸۶)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि अगर खाना खाते में कोई आ जाए तो उसे भी खाने के लिये बुलाना सुन्नत है, मगर दिली इरादे से बुलाए झूटी तवाज़ोअ़ न करे, और आने वाला भी झूट बोल कर येह न कहे कि मुझे ख़्वाहिश नहीं, ताकि भूक और झूट का इज्तिमाअ़ न हो जाए, बल्कि अगर (न खाना चाहे या) खाना कम देखे तो कह दे, بَارَكَ اللّٰه (या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ब-र-कत दे) येह भी मा'लूम हुवा कि सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अपनी इ़बादात

नहीं छुपानी चाहिएं बल्कि ज़ाहिर कर दी जाएं ताकि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस पर गवाह बन जाएं। येह इज़्हार **रिया** नहीं । (हज़रते सय्यिदुना बिलाल के रोज़े का सुन कर जो कुछ फ़रमाया गया उस की शर्ह येह है) या'नी आज की रोज़ी हम तो अपनी यहीं खाए लेते हैं और हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस के इवज़ जन्नत में खाएंगे वोह इवज़ (या'नी बदला) इस से बेहतर भी होगा और ज़ियादा भी । हदीस बिल्कुल अपने ज़ाहिरी मा'ना पर है, वाक़ेई उस वक़्त रोज़ादार की हर हड्डी व जोड़ बल्कि रग रग तस्बीह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान) करती है, जिस का रोज़ादार को पता नहीं होता मगर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं । (मिरआत, जि. 3, स. 202)

मुता-लआ कर लिया हो तब भी दोनों रिसाले (1) **''कफ़न की वापसी** मअ रजब की बहारें'' और (2) **''आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **का महीना''** पढ़ लीजिये । नीज़ हर साल **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** में **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल का बाब **''फ़ैज़ाने र-मज़ान''** भी ज़रूर पढ़ लिया करें । हो सके तो **ईदे मे'राजुन्नबी** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत से 127 या 27 रिसाले या हस्बे तौफ़ीक़ **फ़ैज़ाने र-मज़ान** भी तक़्सीम फ़रमाइये और ढेरों ढेर सवाब कमाइये, तमाम इस्लामी भाइयों से बिल उ़मूम और जामिआ़तुल मदीना और मदारिसुल मदीना के जुम्ला क़ारी साहिबान, असातिज़ा, नाज़िमीन और त़-लबा की ख़िदमतों में बिल ख़ुसूस तड़पती हुई म-दनी अ़र्ज़ है कि बराए करम ! (मेरे जीते जी और मरने के बा'द भी) ज़कात, फ़ित्रा, क़ुरबानी की खालें और दीगर

अ़तिय्यात जम्अ़ करने में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया कीजिये । (इस्लामी बहनें दीगर इस्लामी बहनों और महारिम को अ़तिय्यात की तरग़ीब दिलाएं) ख़ुदा की क़सम ! मुझे उन असातिज़ा और त़-लबा के बारे में सुन कर बहुत ख़ुशी होती है जो अपने गाउं या शहर में जाने की ख़्वाहिश को क़ुरबान कर के र-मज़ानुल मुबारक, जामिआ़त में गुज़ारते और अपनी मजलिस की हिदायात के मुत़ाबिक़ चन्दे के बस्तों पर ज़िम्मेदारियां संभालते हैं, जो असातिज़ा और त़-लबा बिग़ैर किसी उ़ज़्र के महूज़ सुस्ती या ग़फ़्लत के बाइ़स अ़-दमे दिलचस्पी का मुज़ा-हरा करते हैं उन की वजह से मेरा दिल रोता है ।

ख़ुसूसी म-दनी फूल : जो भी इस्लामी भाई या इस्लामी बहनें चन्दा इकठ्ठा करना चाहते हैं उन्हें चन्दे के ज़रूरी अह़काम मा'लूम होना फ़र्ज़ है हर एक की ख़िदमत में ताकीद है कि अगर पढ़ चुके हैं तब भी दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 107 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''चन्दे के बारे में सुवाल जवाब''** का दोबारा मुता-लआ़ फ़रमा लीजिये । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **र-मज़ानुल मुबारक** में चन्दे और बक़र ईद में खालों के लिये कोशिश कर के जो **आ़शिक़ाने रसूल** मेरा दिल ख़ुश करते हैं, तू उन से हमेशा के लिये ख़ुश हो जा और उन के सदक़े मुझ पापी व बदकार, गुनहगारों के सरदार से भी सदा के लिये राज़ी हो जा, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो इस्लामी भाई और इस्लामी बहन (उ़ज़्र न होने की सूरत में) हर साल तीन माह के रोज़े रखने और हर बरस **ज़ुमादल उ़ख़्रा** में रिसाला **''कफ़न की वापसी''** और

माहे **र-जबुल मुरज्जब** में **''आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **का महीना''** और **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** में **''फ़ैज़ाने र-मज़ान''** (मुकम्मल) पढ़ या सुन लेने की सआ़दत ह़ासिल करे मुझे और उस को दुन्या और आख़िरत की भलाइयां नसीब फ़रमा और हमें बे ह़िसाब बख़्श कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में इकठ्ठा रख।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

जश्ने मे'राजुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से **र-जबुल मुरज्जब** की 27वीं शब, **जश्ने मे'राजुन्नबी** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सिल्सिले में होने वाले इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में तमाम इस्लामी भाई अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा शिर्कत फ़रमाया कीजिये, नीज़ 27 **रजब शरीफ़ का रोज़ा रख कर** 60 **माह के रोज़ों के सवाब के ह़क़दार बनिये।**

रजब की बहारों का सदक़ा बना दे

हमें आ़शिक़े मुस्त़फ़ा या इलाही

आंखों की ह़िफ़ाज़त के लिये म-दनी फूल

पांचों वक़्त नमाज़ के बा'द सीधा हाथ पेशानी पर रख कर ''یَا نُوْرُ'' 11 बार एक सांस में पढ़िये और दोनों[2] हाथों की तमाम उंग्लियों पर दम कर के आंखों पर फैर लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ना बीनाई, नज़र की कमज़ोरी और आंखों के जुम्ला अमराज़ से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से अन्धा पन भी दूर हो सकता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा उस ने जफा की । (عبدالرزاق)

म-दनी इल्तिजा : येह मक्तूब हर साल **जुमादल उख़्रा** की आख़िरी जुमा'रात को हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़/**जामिअ़तुल मदीना**/**मदारिसुल मदीना** में पढ़ कर सुना दीजिये ।

(इस्लामी बहनें ज़रूरतन तरमीम फ़रमा लें) **वस्सलाम मअ़ल इक्राम**

तालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस
में आक़ा का पड़ोस

16 जुमादल उख़्रा सि. 1432 हि.

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाअ़ात, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

ماخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن	رضا اکیڈیمی بمبئی	ماثبت بالسنۃ	ادارہ نعیمیہ رضویہ مرکز الاولیاء لاہور
تفسیر درمنثور	دارالفکر بیروت	مراۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
خزائن العرفان	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	نزہۃ المجالس	دارالکتب العلمیۃ بیروت
نور العرفان	پیر بھائی کمپنی لاہور	مکاشفۃ القلوب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
صحیح بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	غنیۃ الطالبین	دارالکتب العلمیۃ بیروت
صحیح مسلم	دارابن حزم بیروت	الحاوی للفتاوی	دارالفکر بیروت
سنن ترمذی	دارالفکر بیروت	انیس الواعظین	کوئٹہ
معجم اوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الجامع الصغیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت	شواہد النبوۃ	مکتبۃ الحقیقۃ استانبول ترکی
فضائل شہر رجب	مخطوطہ	شرح زرقانی علی المواہب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تاریخ دمشق	دارالفکر بیروت	حدائق بخشش شریف	رضا اکیڈیمی بمبئی
معجم السفر	المکتبۃ التجاریۃ مکۃ المکرمۃ	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی